हिंदी

बालभारती

छठी कक्षा

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

स्वीकृति क्रमांक : मराशैसंप्रप/अविवि/शिप्र २०१५-१६/१६७३ दिनांक ६/४/२०१६

हिंदी

बालभारती

छठी कक्षा

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R. Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R. Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

मेरा नाम _____ है।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

प्रथमावृत्ति : २०१६
पाँचवाँ पुनर्मुद्रण : २०२१

© **महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे – ४११००४**

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्य–अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील–सदस्य
प्रा.मैनोद्दीन मुल्ला–सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी–सदस्य
श्री संतोष धोत्रे–सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी–सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे–सदस्य
डॉ.अलका पोतदार–सदस्य–सचिव

हिंदी भाषा अभ्यासगट

डॉ.वर्षा पुनवटकर
सौ. वृंदा कुलकर्णी
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
डॉ.आशा वी. मिश्रा
श्री सुधाकर गावंडे
श्रीमती माया कोथळीकर
श्री रामहित यादव
श्री प्रकाश बोकील
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
श्री रामदास काटे
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
डॉ.शैला चव्हाण
श्रीमती शारदा बियानी
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती गीता जोशी
श्रीमती अर्चना भुसकुटे
श्रीमती रत्ना चौधरी

प्रकाशक :

श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक,
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ,
प्रभादेवी, मुंबई–२५

संयोजन :

डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : रेश्मा बर्वे
चित्रांकन : राजेश लवळेकर, श्री रा. भा. राजपुत, महेश किरडवकर

निर्मिति :

श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री सचिन मेहता, निर्मिति अधिकारी
श्री नितीन वाणी, सहायक निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2016-17/35,000
मुद्रक : SAP PRINT SOLUTION PVT. LTD., THANE.

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

बच्चों का 'निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षाधिकार अधिनियम २००९ और राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप–२००५' को दृष्टिगत रखते हुए राज्य की 'प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या–२०१२' तैयार की गई । इस पाठ्यचर्या पर आधारित 'हिंदी बालभारती' छठी कक्षा की यह पुस्तक 'मंडळ' प्रकाशित कर रहा है । इस पुस्तक को आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अतीव आनंद हो रहा है ।

पाठ्यपुस्तक में कविता, कहानी, निबंध, संवाद, हास्य–व्यंग्य आदि विविध विधाओं का समावेश करते समय विद्यार्थियों की आयु, अभिरुचि, पूर्वानुभव एवं भावविश्व पर विशेष ध्यान दिया गया है । भाषाई कौशल एवं विभिन्न क्षेत्रों के विकास हेतु प्राय: घर, परिसर में घटित होनेवाली घटनाओं/प्रसंगों, स्वच्छता, पर्यावरण, जल संरक्षण आदि आवश्यकताओं/ समस्याओं को आधार बनाया गया है । कौशल एवं विभिन्न क्षेत्रों के दृढ़ीकरण हेतु नाविन्यपूर्ण खेल, कृति, स्वाध्याय, उपक्रम तथा विविध प्रकल्प दिए गए हैं । इनके माध्यम से विद्यार्थियों की रचनात्मकता को विशेष महत्त्व दिया गया है । पुस्तक को अधिक बालोपयोगी बनाने के लिए इसे चित्रमय एवं विद्यार्थीकेंद्रित रखा गया है । भाषाई दृष्टि से आवश्यक अन्य विषयों को भी समाविष्ट किया गया है ।

विद्यार्थी की कल्पनाशीलता, सृजनशीलता एवं विचार शक्ति का उचित ढंग से विकास होना चाहिए । शिक्षक एवं अभिभावकों के मार्गदर्शन के लिए 'दो शब्द' तथा प्रत्येक पृष्ठ पर सूचनाएँ दी गई हैं । अध्ययन–अध्यापन की प्रकिया में ये सूचनाएँ निश्चित ही उपयोगी होंगी । प्राथमिक शिक्षा के विभिन्न चरणों में विद्यार्थी निश्चित रूप से किन क्षमताओं को प्राप्त करें; यह अध्ययन–अध्यापन करते समय स्पष्ट होना चाहिए । इसके लिए प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के प्रारंभ में हिंदी भाषा विषय की अपेक्षित क्षमताओं का पृष्ठ दिया गया है । इन क्षमताओं का अनुसरण करते हुए पाठ्यपुस्तक में समाविष्ट पाठ्यांशों की नाविन्यपूर्ण प्रस्तुति की गई है ।

हिंदी भाषा समिति, भाषा अभ्यासगट और चित्रकारों के निष्ठापूर्ण परिश्रम से यह पुस्तक तैयार की गई है। पुस्तक को दोषरहित एवं स्तरीय बनाने के लिए राज्य के विविध भागों से आमंत्रित प्राथमिक शिक्षकों, विशेषज्ञों द्वारा समीक्षण कराया गया है। समीक्षकों की सूचनाओं और अभिप्रायों को दृष्टि में रखकर हिंदी भाषा समिति ने पुस्तक को अंतिम रूप दिया है ।

'मंडळ' हिंदी भाषा समिति, अभ्यासगट, समीक्षकों, विशेषज्ञों, चित्रकारों, भाषाविशेषज्ञ डॉ. प्रमोद शुक्ल के प्रति हृदय से आभारी है । आशा है कि विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक सभी इस पुस्तक का स्वागत करेंगे ।

पुणे
दिनांक :– ९ मई २०१६, अक्षय तृतीया
भारतीय सौर : १९ वैशाख १९३८

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे–०४

हिंदी बालभारती अध्ययन निष्पत्ति : छठी कक्षा

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया

सभी विद्यार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम विद्यार्थियों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन देना, ताकि उन्हें –

- अपनी भाषा में बातचीत तथा चर्चा करने के अवसर हों ।
- प्रयोग की जाने वाली भाषा की बारीकियों पर चर्चा करने के अवसर हों ।
- सक्रिय और जागरूक बनाने वाली रचनाएँ, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, फिल्म और ऑडियो-वीडियो सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने, लिखने और चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों ।
- समूह में कार्य करने और एक-दूसरे के कार्यों पर चर्चा करने, राय लेने-देने, प्रश्न करने की स्वतंत्रता हो ।
- हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषाओं की सामग्री पढ़ने-लिखने की सुविधा (ब्रेल/ सांकेतिक रूप में भी) और उन पर बातचीत की आजादी हो ।
- अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों ।
- अपनी भाषा गढ़ते हुए लेखन संबंधी गतिविधियाँ आयोजित हों, जैसे – शब्द खेल ।
- हिंदी भाषा में संदर्भ के अनुसार भाषा विश्लेषण (व्याकरण, वाक्य संरचना, विराम चिह्न आदि) करने के अवसर हों ।
- कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों, जैसे – अभिनय (भूमिका अभिनय), कविता, पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों और उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट लेखन और वृत्तांत लेखन के अवसर हों ।
- साहित्य और साहित्यिक तत्त्वों की समझ बढ़ाने के अवसर हों ।
- शब्दकोश का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहन एवं सुलभ परिवेश हो ।
- सांस्कृतिक महत्त्व के अवसरों पर अवसरानुकूल लोकगीतों का संग्रह करने, उनकी गीतमय प्रस्तुति देने के अवसर हों ।

अध्ययन निष्पत्ति

विद्यार्थी –

06.02.01 विभिन्न प्रकार की ध्वनियों, सामाजिक संस्थाओं, परिसर एवं सामाजिक घटकों के संबंध में जानकारी तथा अनुभव को प्राप्त करने हेतु वाचन करते हैं तथा सांकेतिक चिह्नों का अपने ढंग से प्रयोग कर उसे दैनिक जीवन से जोड़कर प्रस्तुत करते हैं ।

06.02.02 गद्य, पद्य तथा अन्य पठित/अपठित सामग्री के आशय का आकलन करते हुए तथा गतिविधियों/घटनाओं पर बेझिझक बात करते हुए प्रश्न निर्मिति करके उनके सटीक उत्तर अपने शब्दों में लिखते हैं ।

06.02.03 किसी देखी, सुनी रचनाओं, घटनाओं, प्रसंगों, मुख्य समाचार एवं प्रासंगिक कथाओं के प्रत्येक प्रसंग को उचित क्रम देते हुए अपने शब्दों में प्रस्तुत करते हैं तथा उनसे संबंधित संवादों में रुचि लेते हैं, वाचन करते हैं ।

06.02.04 संचार माध्यमों के कार्यक्रमों और विज्ञापनों को रुचिपूर्वक देखते, सुनते तथा अपने शब्दों में कहते हैं ।

06.02.05 प्रासंगिक कथाएँ/विभिन्न अवसरों, संदर्भों, भाषण, बालसभा की चर्चा, समारोह का वर्णन, जानकारी आदि को ध्यानपूर्वक एकाग्रता से समझते हुए सुनते हैं, सुनाते हैं तथा अपने ढंग से बताते हैं ।

06.02.06 हिंदीतर विविध विषयों के उपक्रमों एवं प्रकल्पों पर सहपाठियों से चर्चा करते हुए विस्तृत जानकारी देते हैं ।

06.02.07 राष्ट्रीय त्योहार, राष्ट्रीय महापुरुष आदि विषयों पर लिखे गए भाषणों, वर्णनात्मक निबंधों एवं हास्य कथाओं का रुचिपूर्वक आकलनसहित वाचन करते हैं तथा विषयवस्तु का अनुमान लगाते हुए मुद्दों का लेखन करते हैं ।

06.02.08 अपनी रुचि के अनुसार विद्यालयीन एवं घरेलू कार्यक्रम, त्योहार, प्रसंग, घटना आदि का क्रमबद्ध लेखन करते हैं तथा उसमें निहित विषयवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए विशेष बिंदु को खोजते हुए अनुमान लगाकर निष्कर्ष निकालते हैं ।

06.02.09 अंतरजाल पर प्रकाशित होने वाली सामग्री, जानकारीपरक सामग्री, प्रश्नपत्रिका आदि को समझकर पढ़ते हैं उनका संकलन करके उनके आधार पर विषयानुरूप अपनी पसंद, नापंसद, मत, टिप्पणी देते हुए प्रस्तुत करते हैं ।

06.02.10 भाषा की बारीकियों/व्यवस्था/ढंग पर ध्यान देते हुए सार्थक वाक्य बनाते हैं तथा उचित लय-ताल, आरोह-अवरोह, हावभाव के साथ वाचन करते हैं ।

06.02.11 अपनी चर्चा में स्वर, व्यंजन, विशेष वर्ण, पंचमाक्षर, संयुक्ताक्षर से युक्त शब्दों एवं वाक्यों का मानक उच्चारण करते हुए गद्य एवं पद्य परिच्छेदों में आए हुए शब्दों को उपयुक्त उतार-चढ़ाव और सही गति के साथ पढ़ते हुए अपने शब्द भंडार में वृद्धि करते हैं ।

06.02.12 हिंदी भाषा में विविध प्रकार की रचनाओं, देशभक्तिपरक गीत, दोहे, चुटकुले आदि रुचि लेते हुए ध्यानपूर्वक सुनते हैं, आनंदपूर्वक दोहराते तथा पढ़ाते हैं ।

06.02.13 दैनिक लेखन, भाषण-संभाषण में उपयोग करने हेतु अब तक पढ़े हुए नये शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हुए उनके अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते हैं तथा नये शब्दों का लघुशब्दकोश लिखित रूप में तैयार करते हैं ।

06.02.14 सुनी, पढ़ी सामग्री तथा दूसरों के द्वारा अभिव्यक्त अनुभव से संबंधित उचित मुद्दों को अधोरेखांकित करके उनका संकलन करते हुए चर्चा करते हैं ।

06.02.15 विविध विषयों के गद्य-पद्य, कहानी, निबंध, घरेलू पत्रों से संबंधित संवादों का रुचिपूर्वक वाचन करते हैं तथा उनका आकलन करते हुए एकाग्रता से उपयुक्त विरामचिह्नों का उपयोग करते हुए सुपाठ्य, सुडौल अनुलेखन, सुलेखन, शुद्ध लेखन करते हैं ।

06.02.16 अलग-अलग कलाओं, जीवनोपयोगी वस्तुओं की प्रदर्शनी एवं यात्रा वर्णन समझते हुए वाचन करते हैं तथा उनको अपने ढंग से लिखते हैं ।

06.02.17 कहानी, निबंध, घरेलू पत्र, मुहावरे, कहावतें एवं विविध विषयों से संबंधित संवादों का रुचिपूर्वक वाचन करते हुए विभिन्न संदर्भों में विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते समय शब्दों, वाक्य संरचनाओं, मुहावरों आदि का उचित प्रयोग करते हैं ।

दो शब्द

यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान को दृष्टि में रखते हुए भाषा के नवीन एवं व्यावहारिक प्रयोगों तथा विविध मनोरंजक विषयों के साथ आपके सम्मुख प्रस्तुत है । पाठ्यपुस्तक को स्तरीय (ग्रेडेड) बनाने हेतु दो भागों में विभाजित करते हुए उसका 'सरल से कठिन की ओर' क्रम रखा गया है । यहाँ विद्यार्थियों के पूर्व अनुभव, घर-परिवार, परिसर को आधार बनाकर श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन के भाषाई मूल कौशलों के साथ भाषा अध्ययन और अध्ययन कौशल पर विशेष बल दिया गया है । इसमें स्वयं अध्ययन एवं चर्चा को प्रेरित करने वाली रंजक, आकर्षक, सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया गया है ।

पाठ्यपुस्तक में क्रमिक एवं श्रेणीबद्ध कौशलाधिष्ठित अध्ययन सामग्री, अध्यापन संकेत, स्वाध्याय और उपक्रम भी दिए गए हैं । विद्यार्थियों के लिए लयात्मक कविता, बालगीत, कहानी, संवाद आदि विषयों का समावेश है । स्वयं की अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता के साथ-साथ वैविध्यपूर्ण स्वाध्याय के रूप में 'जरा सोचो.....', 'खोजबीन', 'मैंने समझा', 'अध्ययन कौशल' आदि कार्यात्मक कृतियाँ भी दी गई हैं । सृजनशील गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले अभ्यास 'मेरी कलम से', 'वाचन जगत से', 'बताओ तो सही', 'सुनो तो जरा', 'स्वयं अध्ययन' तथा 'विचार मंथन' आदि का समावेश किया गया है । इन कृतियों में एक दृष्टिकोण रखने का प्रयास किया है जिसे समझकर विद्यार्थियों तक पहुँचाना और उनसे कृतियाँ करवाना है ।

शिक्षकों एवं अभिभावकों से यह अपेक्षा है कि अध्ययन-अनुभव देने से पहले पाठ्यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेत एवं दिशा निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें । सभी कृतियों का विद्यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' की पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराएँ । आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्यपुस्तक में दिए गए शब्दार्थ का उपयोग करें । लयात्मक, ध्वन्यात्मक शब्दों का अपेक्षित उच्चारण एवं दृढ़ीकरण कराना आवश्यक है । इस पाठ्यपुस्तक में लोक प्रचलित तद्भव शब्दों का भी प्रयोग किया गया है । विद्यार्थी इनसे सहज रूप में परिचित और अभ्यस्त होते हैं । व्याकरण (भाषा अध्ययन) को समझने हेतु 'भाषा की ओर' के अंतर्गत चित्रों तथा भाषाई खेलों को दिया गया है ताकि पुनरावर्तन और नये व्याकरण का ज्ञान हो ।

आवश्यकतानुसार पाठ्येतर कृतियों, खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का समावेश करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्यपुस्तक के माध्यम से जीवन मूल्यों, जीवन कौशलों, मूलभूत तत्त्वों के विकास का अवसर विद्यार्थियों को प्रदान करें । पाठ्यसामग्री का मूल्यांकन निरंतर होने वाली प्रक्रिया है । इससे विद्यार्थी परीक्षा के तनाव से मुक्त रहेंगे । पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं-श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन, भाषा अध्ययन (व्याकरण) और अध्ययन कौशल का सतत मूल्यांकन अपेक्षित है ।

विश्वास है कि आप सब अध्ययन-अध्यापन में पाठ्यपुस्तक का उपयोग कुशलतापूर्वक करेंगे और हिंदी विषय के प्रति विद्यार्थियों में अभिरुचि और आत्मीयता की भावना जागृत करते हुए उनके सर्वांगीण विकास में सहयोग देंगे ।

✻ अनुक्रमणिका ✻

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
✻	वर्षाऋतु	१
१.	स्वाद की पाठशाला	२,३
२.	पुकार	४-६
३.	आँखें मूँदो नानी	७-१०
४.	नई रीत	११-१५
५.	राजस्थानी	१६
६.	चाचा छक्कन ने चित्र टाँगा	१७-२१
७.	आए कहाँ से अक्षर?	२२,२३
८.	इनसे सीखो	२४-२६
९.	अस्तित्व अपना-अपना	२७-३०
१०.	आसन	३१
११.	सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा	३२-३५
१२.	पढ़क्कू की सूझ	३६-३८
१३.	घड़ी ने खोला राज	३९-४३
१४.	बिना टिकट	४४-४७
१५.	नीला अंबर	४८-५०
✻	पुनरावर्तन - १	५१
✻	पुनरावर्तन - २	५२

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१.	विज्ञान प्रदर्शनी	५४-५५
२.	काटो खेतों काटो रे	५६-५७
३.	तीन लघुकथाएँ	५८-६१
४.	ऊर्जा आए कहाँ से?	६२-६६
५.	मेरा भाग्य देश के साथ	६७-६९
६.	हमारे परमवीर	७०-७२
७.	बूझो तो जानो	७३
८.	आह्वान	७४-७६
९.	फैसला	७७-८१
१०.	दिनदर्शिका	८२
११.	सुनहरे हिमालय के दर्शन	८३-८७
१२.	दोहे	८८-९०
१३.	नई राह की ओर	९१-९४
१४.	सारे जहाँ से अच्छा	९५-९८
१५.	झाँसी की रानी	९९-१०१
✻	एकता का गूँजे इकतारा	१०२
✻	पुनरावर्तन - ३	१०३
✻	पुनरावर्तन - ४	१०४